Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 GISRRJ | Volume 4 | Issue 3 | ISSN : 2582-0095

हर्षचरितम् में धर्मशास्त्रीय अंश

रेखा जैसवार
शोधच्छात्रा, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज।

Article Info
Volume 4 Issue 3
Page Number : 94-97
Publication Issue :
May-June-2021
Article History
Accepted : 20 June 2021
Published : 30 June 2021

सारांश– इसमें बाणभट्टकृत हर्षचरित में उपलब्ध धर्मशास्त्र विषयक संदर्भ उपस्थत है। बाण ने हर्षचरित में धार्मिक एवं सामाजिक रूपरेखा को प्रस्तुत किया है, जिसमें उन्होंने यज्ञ, दान, महापातक एवं विवाह संस्कार आदि प्रसंगों का उल्लेख मिलता है। तत्कालीन सामाजिक एवं धार्मिक विषयक ज्ञान प्राप्त होता है, ज्ञान के बल पर ऊपर उठकर जो पूर्ण सत्य, आप्तकार्यता अमृतत्व और परम शान्ति की अनुभूति होती है।

मुख्य शब्द– यज्ञ, षड्हुति, अग्नि, महापादक, स्कन्द, हवन, प्रायश्चित, इन्द्राणी।

मनुष्य तथा समाज की उन्नति के निमित्त हिन्दू शास्त्रकारों ने जिन आदर्शों का विधान किया है उनमें 'धर्म' का सर्वोच्च स्थान है। मनुष्य के चार पुरुषार्थों में धर्म अन्यतम है। धर्म मनुष्य तथा समाज के बीच सम्बन्धों की व्याख्या करता है, उन्हें नियमित बनाता है तथा उनके पारस्परिक सम्बन्धों को नियंत्रित भी करता है। धर्म शब्द मूलतः 'धृ' धातु से निष्पन्न होता है, जिसका शाब्दिक अर्थ है 'धारण करना' अथवा अस्तित्व बनाये रखना। यह वह तत्त्व है जो मनुष्य तथा समाज के अस्तित्व को कायम रखता है। वह सामाजिक व्यवस्था का नियामक है। महाभारत में कहा गया है कि 'धर्म सभी प्राणियों की रक्षा करता है, सभी को सुरक्षित रखता है तथा सृष्टि का अस्तित्व बनाये रखता है।[प] इसी में आगे बताया गया है कि धर्म की व्यवस्था सभी प्राणियों के कल्याण के लिये की गयी है, जिसमें सभी प्राणियों का हित होता है वही धर्म है।[पप] वैशेषिक दर्शन में कहा गया है कि जिससे लौकिक तथा पारलौकिक कल्याण की सिद्धि होती है वह धर्म है।[पपप]

महाकवि बाणभट्ट धर्मशास्त्र के ज्ञाता थे। हर्षचरित में जगह–जगह धर्मशास्त्र सम्बन्धी अनेक प्रसंग उपलब्ध होते हैं। धर्म के तीन स्कन्ध माने गये हैं– यज्ञ, अध्ययन तथा दान। इन तीनों स्कन्धों का विवरण हर्षचरित आख्यायिका में प्राप्त होते हैं।यज्ञ मनुष्य के आत्मिक उत्कर्ष के साथ ही साथ मानसिक शान्ति तथा विभिन्न प्रकार के महापातकों के शमन हेतु उपादान माने जाते हैं। न केवल राजा द्वारा यज्ञ करने का विधान था अपितु प्रजा द्वारा भी यज्ञ करने का प्रचलन था। यह बात इस तथ्य से स्पष्ट होती है कि पुण्यभूति के

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

शासन में निरन्तर होने वाले यज्ञीय धुओं से उत्पन्न अश्रुपात (निकलने वाले आँसुओं की धारा) से प्रक्षालित थे जैसे वर्णसंकर दोष मिट गया हो– **मखशिखिधूमजलधरधाराद्यौत इव ननाश वर्णसंकरः।**

हर्षचरित में षडाहुति होम की चर्चा मिलती है– **मन्दं मन्दं द्वारपालैः प्रणम्यमानैश्च दीयमानसर्वस्वम्, पूज्यमानकुलदेवतम् प्रारब्धामृतचरुपचनक्रियम्, क्रियमाणषडाहुतिहोमम्।**[पअ]

जिसमें छह आहुतियों का प्रक्षेप होता है उसे षडाहुति होम कहते हैं। छह आहुतियाँ इस प्रकार हैं– (1) **ओं देवकृत्स्यैनसोऽवयजनमसिस्वाहा (2) ओं मनुष्यकृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा (3) ओं पितृकृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा (4) ओं आत्मकृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा (5)ओं एनसोऽवयजनमसि स्वाहा (6) ओं यच्चैनो विश्वांश्चचार यद्वां विद्वांस्तस्य सर्व्वस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा।**[अ] हर्षचरित के टीकाकार शंकर के अनुसार छः बार अग्नि में आहुति डालकर जो होम किया जाता है, उसे षडाहुति होम कहते हैं।

बाण ने हर्षचरित में एक स्थान पर 'कोटिहोम' का उल्लेख किया है– **'स्थानस्थानेषु पवनबलकुटिलाभिः कोटिहोमधूमलेखाभिरुल्लसन्तीभिर्यममहिषविषाण कोटिभिरिवोल्लिख्यमानम्'**[अप] कोटिहोम यह एक प्रकार का यज्ञ है। वराहमिहिर ने दिव्योत्पात के शमन करने के लिए इसके विधान का उल्लेख किया है–

दिव्यमपि शुभमुपैति प्रभूतकनकान्नगोमहीदानैः।
रुद्रायतने भूमौ गोदोहात् कोटिहोमाच्च।।[अपप]

बाण ने धर्मशास्त्र के तीसरे स्कन्ध 'दान' का वर्णन अनेक प्रसÅों में किया है। हर्ष का वर्णन करते हुये बाण लिखते हैं कि जिसका वक्षःस्थल जीवनपर्यन्त लिये हुए 'सर्वस्य महादान' कर देने के दीक्षाव्रत के वल्कल–वस्त्र सदृश दिखाई दे रहे मोतियों के हार के किरण–प्रकाश से आवृत हो रहा था।[अपपप] एक अन्य स्थल पर 'महादान' पद की चर्चा आयी है– **महादानविधानकलकलाभिद्रुता इव प्राद्रवन्नुपद्रवाः।**[पग]

बाण ने दान के साथ–साथ स्नानादि की भी मीमांसा हर्षचरित में की है। यह तथ्य सर्वविदित है कि समस्त धार्मिक क्रियायें व्यक्ति के स्नानादि क्रियाओं से निवृत्त होने के बाद ही सम्पन्न की जाती है।

बाण ने एक स्थल पर 'अवमृथ स्नान' की चर्चा की है– **राजसर्गसमाप्त्यवमृथस्नान– दिवसमिव सर्वप्रजापतीनाम्।**[ग] नित्य–नैमित्तिक कर्मों के अन्तर्गत भोजनोपरान्त आचमन करने का उल्लेख हर्षचरित में हुआ है।

र्षचरित के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि बाणभट्ट संस्कारों को विशेष महत्त्व देते थे। हर्षचरित में बाण ने स्वयं के वर्णन–प्रसंग में उल्लेख किया है कि मैं सोमपान करने वाले वात्स्यायन गोत्र में उत्पन्न ब्राह्मण हूँ। उचित समय पर मेरे उपनयन आदि संस्कार सम्पन्न किये गये हैं।

हर्षचरित में 'विवाह' संस्कार का भी उल्लेख मिलता है। हर्षचरित के चतुर्थ उच्छवास में बाण ने राज्यश्री के विवाह के प्रसंग में इन्द्राणी के पूजन की चर्चा की है– **'अशेषाशामुखाविभूतचारणपरम्परापूर्यमाणप्रकष्ठो प्रतिष्ठाप्यमानेन्द्राणी दैवतम्।**[गप] विवाह पद्धतियों के शास्त्रीय ग्रन्थों के अनुसार विवाह में शची–पूजन का निर्देश दिया गया है– **'सम्पूज्य प्रार्थयित्वा तां शचीदेवीं गुणाश्रयाम्।**

बाण राज्यश्री के विवाह–वेदी के प्रसंग में लिखते हैं कि वह विवाह–वेदी शमी के पल्लवों से मिश्रित खीलों से उद्भाषित हो रही थी– **'नूतनशूर्यार्पितश्यामलशमीपलाशमिश्रलाजजहासिनीं वेदीम्।**[गपप]

पाणिग्रहण संस्कार विवाह संस्कार का प्रमुख कृत्य है। यशोमती हर्ष से कहती हैं कि मैं धर्म से सदाचरण से धवल कुल में जन्म लिया है तथा नरेन्द्र श्रेष्ठ तुम्हारे पिता ने मेरा पाणिग्रहण किया है–**'नरेन्द्रवृन्दारकेणगृहीतःपाणिः।**[गपपप]

हर्षचरित में बाण ने अग्नि–संस्कार का उल्लेख किया है[गपअ] जिसे अन्त्येष्टि–संस्कार भी कहा जाता है। प्रथम पन्द्रह संस्कार ऐहिक जीवन को पवित्र और सुखी बनाने के लिये हैं जबकि यह अन्तिम मृतक संस्कार परलोक–सुख के लिए।

बाण ने हर्षचरित में 'महापातक' पद का वर्णन प्रभाकरवर्द्धन के रुग्णावस्था के प्रसंग में किया है–**अग्निमयानिव जनितहृदयदाहान् विषमयानिव दत्तमूर्च्छावेगान् महापातकभयानिवोत्पादितघृणान्।**[गअ] पितृशोक के कारण वि£ल हर्ष के प्रसंग में महापातक का प्रयोग किया है। मनुस्मृति के अनुसार ब्रह्महत्या, सुरापान, सुवर्ण की चोरी तथा गुरूपत्नी गमन ये सभी महापातक कहे गये हैं। ब्रह्महत्या आदि करने वालों का संसर्ग भी महापातक है। हर्षचरित में चन्द्र द्वारा गुरु (बृहस्पति) की पत्नी के अपहरण का उल्लेख मिलता है–**गुरुदारग्रहणमकार्षीत्।**[गअप] मनुस्मृति के अनुसार गुरुपत्नी का अपहरण कर उसके साथ सम्भोग करना 'महापातक' है।

हर्षचरित में 'प्रायश्चित' का भी उल्लेख मिलता है। बाण ने यशोमती को स्त्री जाति के प्रायश्चितों की शुद्धि जैसी बताया है। हर्षचरित में बाण ने यशोमती को पवित्र मनोवृत्तियों अथवा पवित्र आचरणों में धर्मशास्त्रमयी जैसी बताया है। तथा वह राजा (प्रभाकरवर्द्धन) के प्रेम, विश्वास, धर्म और सुख की भूमि थी– **यशोमती नाम महादेवी प्राणानां प्रणयस्य विस्श्रम्भस्य धर्मस्य सुखस्य च भूमिरभूत।** धर्मशास्त्र के वचनानुसार पत्नी धर्माचरण का साधन है। ब्राह्मण ग्रन्थों में भी पत्नी को धर्माचरण का प्रमुख साधन माना गया है– **अयज्ञो वा एष योऽपत्नीकः।** महाभारत के अनुसार तो पत्नी ही त्रिवर्ग (धर्म अर्थ और काम) का मूल है।[गअपप]

इस प्रकार हम देखते हैं कि बाण ने हर्षचरित में जगह–जगह धार्मिक प्रसंग का उल्लेख कर अपने धर्मशास्त्र–विषयक ज्ञान से पाठकों को परिचित कराने का पूर्णरूप से प्रयास किया है।

सन्दर्भ

i धारणात् धर्ममित्याहुः धर्मो धारयते प्रजाः।
यत्स्याद्धरण संयुक्तं स 'धर्म' इति निश्चयः।।'—महाभारत (कर्णपर्व)

ii प्रभवार्थं च भूतानां धर्म प्रवचनं कृतम्।.....महाभारत

iii यतोऽभ्युदय निःश्रेयस् सिद्धिः स धर्मः।—कणाद्, वैशेषिकदर्शन

iv हर्षचरित— 5/457

v हर्ष0 जीवानन्दकृत टीका— पृ0 472

vi हर्षचरित—5/453

vii बृहत्संहिता—46/6

viii हर्षचरित—2/187

ix हर्षचरित—3/263

x हर्षचरित—2/189

xi हर्षचरित—4/414

xii हर्षचरित—4/435

xiii हर्षचरित—5/503

xiv हर्षचरित—5/516

xv हर्षचरित—5/477

xvi हर्षचरित—3/237

xvii महाभारत आदि0 74/40